संतुलन की स्थिति (1) पूर्ण रोजगार (2) अल्प रोजगार (3) अति पूर्ण रोजगार

1. पूर्ण रोजगार संतुलन (Full Employment Equilibrium) :— पूर्ण रोजगार संतुलन की स्थिति में, AS तथा AD में समानता उस स्तर पर होती है जिस पर अर्थव्यवस्था में साधनों को पूर्ण रोजगार प्राप्त हो रहा होता, अथवा उनका पूर्ण उपयोग हो रहा होता है।

चित्र में E पूर्ण रोजगार संतुलन बिन्दु है जहां AS = AD

OL पूर्ण रोजगार संतुलन उत्पादन है।

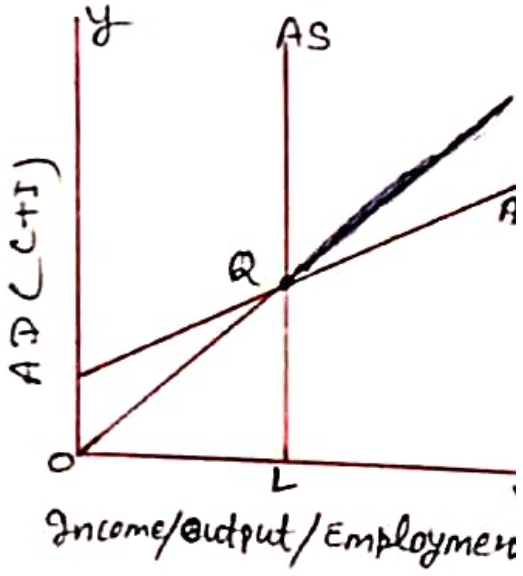

(29)

2. अल्परोजगार संतुलन (Underemployment Equilibrium) :— अल्परोजगार संतुलन वह स्थिति है जिसमें समग्र मांग (AD) तथा समग्र पूर्ति (AS) में समानता अर्थात संतुलन पाया जाता है परंतु कुछ साधन बेरोजगार रह जाते हैं। इसे चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

चित्र में E संतुलन बिन्दु है जहां

AD = AS

जबकि पूर्ण रोजगार स्तर पर उत्पादन OL है, तथा उत्पादन का संतुलन स्तर OL_1 है,

क्योंकि बिन्दु E पर $OL_1 < OL$ है, इसे अल्परोजगार की स्थिति कहा जाएगा, क्योंकि साधनों को पूर्ण रोजगार प्राप्त नहीं हो पाया है,

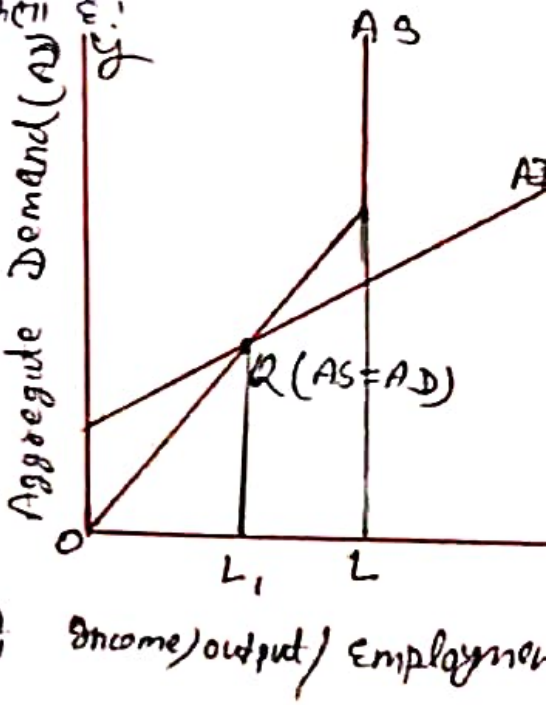

यद्यपि बिन्दु E पर समग्र मांग (AD) तथा समग्र पूर्ति (AS) बराबर है इसलिए यह संतुलन की स्थिति तो प्रकट करता है परंतु यह संतुलन अल्परोजगार संतुलन है।

3. अति पूर्ण रोजगार संतुलन (Equilibrium Beyond Full Employme

AS तथा AD में संतुलन पूर्ण रोजगार की स्थिति से आगे भी संभव है। जो निम्न चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है:

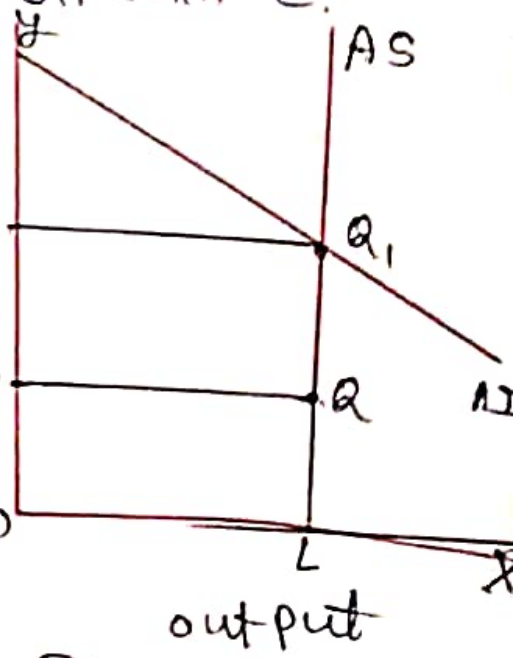

चित्र में Q पूर्ण रोजगार संतुलन है अति पूर्ण रोजगार संतुलन स्तर Q_1 है।

क्योंकि उत्पादन OL से अधिक नहीं बढ़ सकता क्योंकि यह उत्पादन पूर्ण रोजगार के अनुरूप है। Q_1 केवल ऊँचे कीमत स्तर पर जहाँ AD > AS और AS पहले ही अपने पूर्ण रोजगार स्तर पर पहुँच चुका है। तब AD में वृद्धि के कारण रोजगार में वृद्धि नहीं हो सकती परंतु कीमत स्तर का बढ़ना अनिवार्य हो जाता है इसे ही मुद्रा स्फीति की स्थिति कहते हैं।